ISBN: 978-93-86906-57-1
IMPRINT: BAHUVACHAN

TRAVEL
₹750 HB

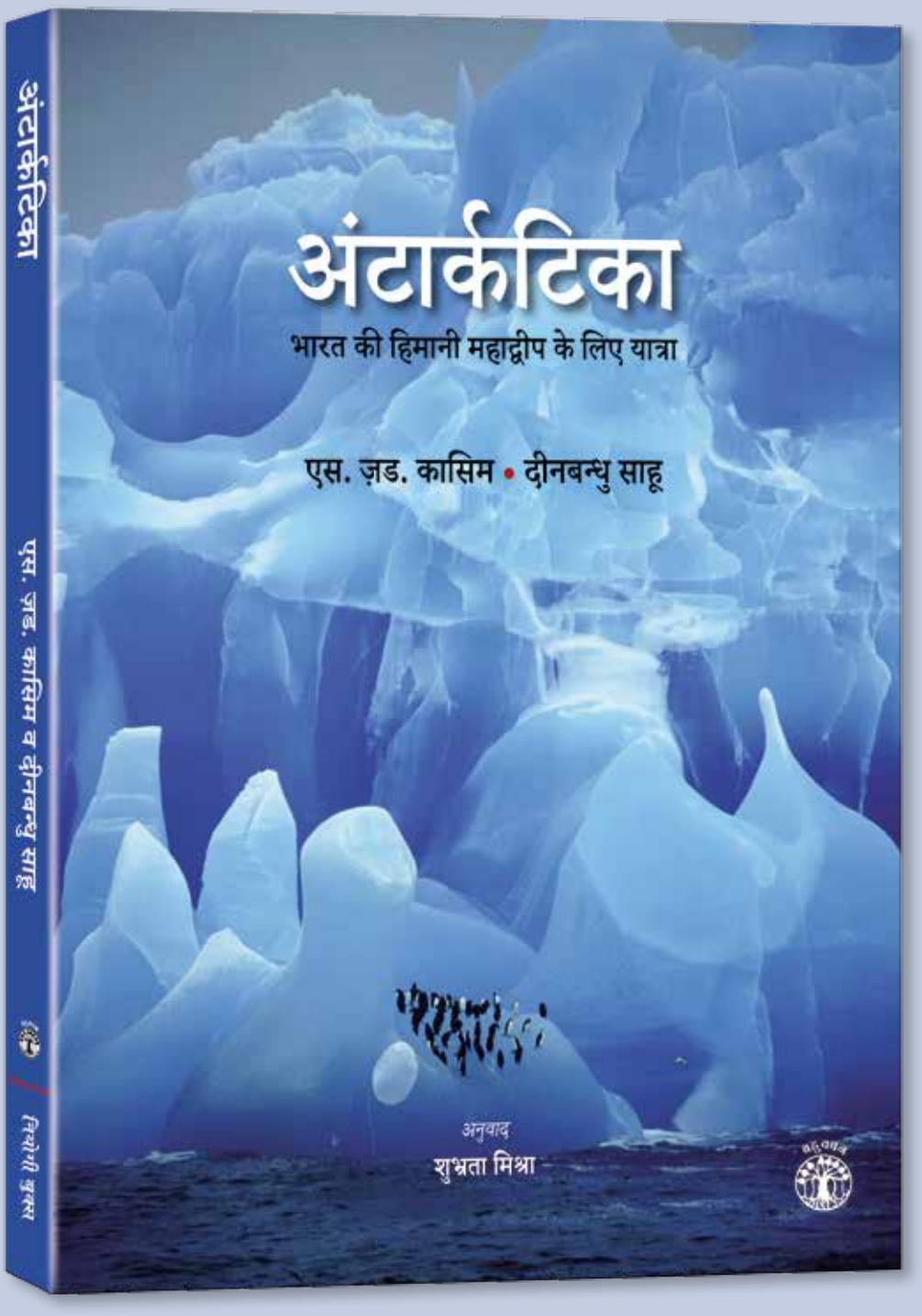

Published by
NIYOGI BOOKS
Fine publishing within reach

NIYOGI BOOKS PRIVATE LIMITED
Block D, Building No. 77, Okhla Industrial Area, Phase-1, New Delhi-110020, INDIA
Phone: 011 26816301, 26818960, Email: niyogibooks@gmail.com, Website: www.niyogibooksindia.com

अंटार्कटिका

भारत की हिमानी महाद्वीप के लिए यात्रा

एस. ज़ड. कासिम • दीनबन्धु साहू

अनुवाद

शुभ्रता मिश्रा

TRAVEL
₹750
ISBN: 978-93-86906-57-1
Size: 236mm x 176mm; 160pp
130 gsm art paper (matt)
All colour; 157 photographs
Hardback with dust jacket

अंटार्कटिका, रहस्य और चमत्कार की भूमि, पृथ्वी का आखिरी महान जंगल है। पचास लाख साल पहले, यह कई प्रकार के जानवरों और पौधों के साथ सदाबहार जंगल था। आज, महाद्वीप एक सफेद रेगिस्तान है और दुनिया में सबसे ठंडा, सबसे शुष्क, तूफानी, हवादार और सबसे अधिक पहुँचने योग्य स्थान माना जाता है। यह चरम सीमा का एक महाद्वीप है। निरंतर दिन के लगभग छह महीने, निरंतर रात के छह महीने, सबसे कम तापमान -89.60 डिग्री सेल्सियस, और हवाएँ जो बर्फबारी के दौरान प्रति घंटे 190 किमी. प्रति घंटा तक पहुँचती हैं, इस महाद्वीप को एक अद्वितीय स्थान बनाती हैं। इस नो-मैन महाद्वीप में बर्फ के रूप में दुनिया के ताजे पानी के जमा का लगभग 90 प्रतिशत हिस्सा है। यदि बर्फ पिघलने की अनुमति है, तो पृथ्वी का समुद्र-स्तर कई मीटर तक बढ़ जाएगा, जिससे पृथ्वी का एक बड़ा हिस्सा जलमग्न हो जाएगा। इस दूरस्थ, पृथक और चरम महाद्वीप की भारत की यात्रा ज्ञान की खोज में और इसके रहस्य को सुलझाने की इच्छा के साथ शुरू हुई।

अंटार्कटिका: भारत की हिमानी महाद्वीप के लिए यात्रा– एक मिशन, एक पहल, एक चुनौती, एक रोमांच, एक सपना और अंत में, दुनिया में भारत की वैज्ञानिक क्षमता स्थापित करने के बारे में है। यह पुस्तक न केवल इस रहस्यमय महाद्वीप की सुंदरता का वर्णन करती है बल्कि हमें दो ऐसे महानुभवों का भी विवरण देती है, जो अपने-अपने क्षेत्र के विशेषज्ञ हैं।

भारत की विविध रोमांचकारी अंटार्कटिका की यात्राओं का रोचक वर्णन दुर्लभ चित्रों सहित।

डॉ. सैयद जहूर कासिम नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओशनोग्राफी के निदेशक थे और उन्हें 1981 में भारत सरकार के पर्यावरण विभाग क संस्थापक सचिव नियुक्त किया गया था। 1982 में, उन्होंने महासागर के नव स्थापित विभाग के सचिव के रूप में कार्यभार सँभाला। डॉ. कासिम ने दिसंबर 1981 में अंटार्कटिका के भारत के पहले अभियान का नेतृत्व किया और 1988 तक सात अन्य अभियानों को सफलतापूर्वक संगठित और निर्देशित किया। वे 'ओशन मैन ऑफ इंडिया' और 'अंटार्कटिका हीरो' के नाम से जाने गए। डॉ. कासिम को यूके के महासागर अंतर्राष्ट्रीय लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड, पद्म भूषण और पद्मश्री जैसे कई राष्ट्रीय और अतंर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

डॉ. दीनबंधू साहू 1987-88 के दौरान अंटार्कटिका के सातवें भारतीय वैज्ञानिक अभियान में अंटार्कटिका जाने वाले पहले भारतीय छात्र थे। उन्होंने अठारह महीने के रिकॉर्ड समय के भीतर सभी सात महाद्वीपों और पाँच महासागरों का दौरा किया है। उन्होंने आर्कटिका में दो यात्राएँ कीं। वह स्मिथसोनियन इंस्टीट्यूशन, वाशिंगटन डीसी, आईएनएसए-जेएसपीएस के साथ-साथ जापान में भी एक अतिथि साथी थे, और उन्होंने बड़े पैमाने पर यात्रा की है। वह समुद्री विज्ञान के क्षेत्र में अनेक उत्कृष्ट योगदान के लिए राष्ट्रीय पर्यावरण विज्ञान अकादमी, भारत में पुरस्कार सहित कई पुरस्कार प्राप्तकर्ता हैं। डॉ. साहू ने '*चिलिका: द अनकॉल्ड स्टोरी*' नामक एक वृत्तचित्र निर्देशित किया। वह कई अतंरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय निकायों के सदस्य हैं और उन्हें भारत के चुनिंदा बीस सामाजिक उद्यमियों में मान्यता प्राप्त है। वर्तमान में वह बॉटनी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय में एक संकाय सदस्य हैं।

डॉ. शुभ्रता मिश्रा राजभाषा पुरस्कार सहित अनेक पुरस्कारों से सम्मानित एक स्वतंत्र विज्ञान लेखिका हैं। विज्ञान प्रसार एवं आकाशवाणी से जुड़ीं डॉ. मिश्रा की कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।